

stehlen, fortnehmen, wegschleppen: अपनीतास्मि भीष्मेण MBh. 5, 6087. अपनीय शची भार्या शक्यमिन्द्रस्य जीवितुम् R. 3, 54, 26. अयं पर्वणि वेगेन यज्ञियास्योऽपनीयते R. SCHL. 4, 40, 9. केन — अपनीतानि विसानि MBh. 13, 4511. यदिदं राज्यमपनीतमनार्यया R. GORR. 2, 117, 7. धातुः सुप्तशक्तिर्मुखेभ्यः श्रुतिगणमपनीतम् Bhāg. P. 8, 24, 61. यदि भाण्डान्यपनयेत्काकः VAR. B. BH. S. 94, 13. — 3) *verscheuchen, entfernen, wegnehmen, weg-schaffen*: शत्रून्पनेष्यामि BHATT. 16, 30. पक्षम् Suçr. 2, 47, 11. तलायुकाम् 4, 42, 9. आत्मनस्तु ततः मृता कृत्यानां च — मम चापनयामास शल्यान् MBh. 5, 7136. धत्ते सिद्धं रथात्स्मादपनीय 4, 1437. PAÑKAT. ed. orn. 32, 19. तैलैर्लोकाद्गन्धं शिरसोऽपनीय VAR. B. BH. S. 76, 4. (im Sūtra शम्भो ऽटि) अटीत्यपनीयामोति वक्तव्यम् Schol. zu P. 8, 4, 63. Vārt. दर्प तस्य HARIV. 13078. रामस्ते सुमहदुखं शोकं चैवापनेष्यति MBh. 3, 6047. R. 2, 83, 9. 3, 33, 68. आर्तानां भयम् ÇĀK. 154. नो विपादम् Bhāg. P. 3, 9, 25. आर्तिम् 6, 7, 31. तृणम् Mṛkṣh. 19, 16. अन्नान् ÇĀK. zu BH. Ā. UP. S. 10. आत्तिम् KUMĀRILA bei MÜLLER, SL. 182, N. जलेन कः शीतमपनयति PAÑKAT. I, 333. मे कृतघ्नतादोषम् 214, 5. पशुत्वमनयोः PRAB. 39, 11. शुक्लपटस्य शौक्ष्ण्यं रागेण Schol. zu KAP. 4, 10. KIR. 3, 46. हृदयात् *sich Etwas aus dem Sinne schlagen*: ब्रह्मकृत्याकृतं पापं हृदयादपनीयताम् so v. a. *glaube nicht, dass du die Schuld eines Brahmanenmordes auf dich geladen hättest*, Daç. 1, 47. — 4) (Fesseln, Kleider, Schmucksachen) *abnehmen, abziehen, ablegen*: चरणाभिगडमपनय Mṛkṣh. 109, 15. अपनीतसंयमन 110, 3. ऐतं वा बन्धनान्यपनय HIT. 13, 12. Dhṛtās. 96, 1. वध्यमालो चारुदत्तस्य कण्ठादपनीय Mṛkṣh. 176, 8. विरुक्मिवापनयामि पयोधरोधकमुरासि डुकूलम् Git. 12, 4. अपनीतकचम् MBh. 7, 5192. अपनीतपर्याणम् — तुरगोतमम् Vid. 46. अपनयन्तु भवत्या मृगयावेशम् *ablegen* ÇĀK. 24, 15. अपनोय विभूषणानि HARIV. 7042. अपनीय ततः कण्ठात्पुष्पदाम 7697. Mṛkṣh. 13, 6. VIKR. 27, 8. RAGH. 4, 64. IT. 4, 13. VAR. B. BH. S. 47, 54. अपनोतप्राग्वेश RĪGĀ-TAR. 3, 229. अपनयित्वा माल्याभरणान्यपनयित्वा मृदुकानि वस्त्राणि SADDH. P. 4, 19, b. — 5) *ausziehen, gewinnen aus*: तापसा इङ्गदीभ्यस्तैलमपनयति दीपार्थम् Schol. zu ÇĀK. 14. — 6) *lügen, in Abrede stellen*: निर्दिश्य वा देशादिकं नैतन्मया निर्दिष्टमिति अपनयति KULL. zu M. 8, 53. यः प्रत्यर्थी यत्परिमाणमपनयति ders. zu 59. — 7) *ausnehmen, ausschliessen* (aus einer Regel) Schol. zu RV. PRĀT. 11, 4. — 8) *अपनीत* *abgeführt von* so v. a. *im Widerspruch stehend mit*: तद्वधर्मापनीतस्य दृश्यते कर्मणः फलम् R. 3, 53, 40. — 9) *अपनीत* *schlecht ausgeführt, verpfuscht*: अपनीतं मुनीतेन यो ऽर्थं प्रत्यानिनीषते MBh. 5, 1499. n. ein unkluges —, *schlechtes Benehmen* 6, 585, 7. 8294. 13, 4640. R. 3, 66, 24. Gehört eigentlich nicht hierher, da das Wort in अप + नीत zu zerlegen ist (vgl. 2. अपनय). — Die Bed. von अपनीयते Bhāg. P. 5, 18, 33 ist uns nicht recht klar. — Vgl. अपनय, °नयन. — *desid. zu entfernen wünschen*: अन्धतमसमन्धकारिणापनीयति PRAB. 108, 18. इमां शङ्कामपनीयति KULL. zu M. 1, 27.

— व्यप 1) *wegführen, abführen*: व्यपनियः सुदुःखार्ताम् R. 2, 66, 13. MBh. 1, 6017. न देवं व्यपनयति विमार्गं नास्ति देवं प्रभुम् 13, 341. — 2) *wegschaffen, entfernen, vertreiben*: शरे तु तस्मिन्व्यपनीतमात्रे R. GORR. 2, 63, 46. शोकशक्त्यम् Suçr. 2, 543, 2. कलङ्कम् Mṛkṣh. 168, 16. (भयम्) ते व्यपनयिष्यामि नीहार्मिव रश्मिवान् R. 2, 10, 37. 6, 21, 36. ते दर्पम् MBh. 3, 7037. HARIV. 15071. fg. प्रजागरम् MBh. 8, 3764. ते बुद्धिम् 2, 1971. ते म-

न्युम् 14, 132. 6, 5836. शोकम् R. 3, 68, 35. दुःखम् MBh. 4, 495. 15, 860. वस्तामसो वृत्तिम् MĀLAV. 1. *abgiessen*: तच्छेद्यपनीयतुं शक्नुयात् AIT. Br. 7, 5. Jmd ein Kleid ausziehen: व्यपनीय चीरम् R. III, S. 463. *ablegen, sich befreien von*: व्यपनीतशरासनः MBh. 3, 4687. व्यपनीयिह कित्त्वियम् 4686. 12, 8949. तन्नाम् 3, 2008. R. 5, 28, 18. कर्मारब्धं व्यपनयन् Bhāg. P. 5, 10, 15. — *caus. wegschaffen lassen*: तन्मया लत्कृते ह्येतदन्यथा व्यपनायितम् (अन्नम्) MBh. 7, 1290.

— अपि *hingeleiten zu, auf*: वाचैव तद्यज्ञं पन्थामपिनयति AIT. Br. 1, 8. स एवेनमपथात्पन्थामपिनयति TS. 2, 2, 2. 1. देवलोके यजमानमपिनयति ÇAT. Br. 1, 8, 2, 11. 20. 12, 4, 2, 1. 8, 2, 21. *hingelegt so v. a. dem Tode nahe*: यदि ह वा अपनीत इव यजमानो भवति AIT. Br. 2, 2. *versetzen in*: गवामेवैनं न्यायमपिनोय TS. 2, 2, 2, 2.

— अभि 1) *geleiten, hinführen zu, herführen zu*: अभि सूयवंसं नय RV. 1, 42, 3. 6, 53, 2. 61, 14. वस्त्यो राशिर्भिनेतासि भार्गवम् 4, 20, 8. स्वर्यदृष्टमन्त्रिणा उ अन्धो ऽभि मा वर्पुर्दृश्ये निनीयात् 7, 88, 2. रथं येन देवासे अर्नपन्नभि प्रियम् 10, 33, 7. AV. 6, 47, 3. स नः स्वर्गमभि नेष लोकम् 12, 3, 16. 17. मृता हि मामधिरो दृष्ट्वान्यनयद्गृहान् MBh. 3, 4759. वधमभिनीयमानश्चौरः Schol. in der Einl. zu KĀURAP. दृष्ट्वा शरं व्यामभिनीयमानम् zur Bogensehne geführt MBh. 3, 769. अभिनीतानि शस्त्राणि herbeigebraucht, herbeigeschafft 12, 3691. — 2) *mit Geberden begleiten, pantomimisch darstellen, auf dem Theater aufführen*: गीतानि रम्याणि जगुः प्रहृष्टाः काताभिनीतानि मनोहराणि HARIV. 8448. वचनमभिनयत्या MĀLAV. 26. पूर्वानुभूतसुखस्मृतिमभिनयन् Schol. in der Einl. zu KĀURAP. तदुक्तमभिनीयाभियुक्तैः VEDĀNTAS. (ed. Calc. 1829) 23, 3. = अभिनयमङ्गच्छाविशेषं कृत्वा Schol. 119, 10. खड्गपतनं कृत्वादभिनयन् Mṛkṣh. 170, 14. श्रुतिम् ÇĀK. 31, 8. कुसुमावचयम् 43, 1. बालस्पर्शम् 103, 19. v. l. आलिङ्गनम् ÇĀK. Çh. 83, 1. दुर्निमित्तम् 97, 2. स्पर्शमुखम् PRAB. 11, 15. रामाक्षम् 57, 6. यथारम्भम् MĀLAV. 20, 20. धूर्तसमागमनाम नाटकम् Dhṛtās. 67, 13. 68, 16. PRAB. 3, 17. Verz. d. Oxf. H. No. 273. अभिनीतम् adv.: अतिध्रुवाष्टकस्तैरभिनीतम् (पठेत्) *ohne Geberdenspiel mit Augen, Brauen, Lippen und Händen* Suçr. 1, 13, 6. Hierher gehört wohl auch कथायाः[.] स्वभिनीतता ein Vortrag mit gutem Geberdenspiel Schol. zu BHATT. bei GOLDST. u. अभिनीत; its easy understanding GOLDST. — 3) *verstreichen lassen*: ते ऽभिनीयैवाहः पद्ममालम्भत । तेनाभिनीयैव रात्रेः प्रार्चन् TBh. 1, 3, 6, 6. Vgl. u. अति. — 4) *अभिनीत* *abgerichtet*: अभिनीताश्च (गजाः) शिताभिः MBh. 6, 1765. *gebildet, klug, geschickt*, von einer Person R. 4, 28, 13. अभिनीततरं वाक्यम् MBh. 12, 201. 768. एतावदभिनीतार्थमुक्त्वा R. 2, 39, 36 (38, 45 GORR.). Andere Bedeutungen geben die indischen Lexicographen dem partic.; s. u. अभिनीत. — Vgl. अभिनय, °नेतव्य, °नेय.

— अव 1) *hinab* —, *hineinführen* (in's Wasser u. s. w.), *hinabstossen*: ऋषीसे अत्रिमवनीतमुन्निन्यथुः RV. 1, 116, 8. 118, 7. कैनमवभ्रमवनेष्यामि ÇAT. Br. 11, 7, 2, 7. अन्नानपोऽवनीयमानान् KĪTZ. Çh. 14, 3, 3. — 2) *abgiessen, herabgiessen, darübergiessen* AV. 7, 94, 1. VS. 7, 25. 5, 25. ÇAT. Br. 3, 5, 2, 19. 4, 2, 2, 4. 14, 9, 2, 4. यदाशिरमवनयति AIT. Br. 3, 27. चमसाधवनीयेऽवनयति KĪTZ. Çh. 9, 3, 21. उच्छेप्यो वल्मीकव्यापामवनेष्येत् TBh. 1, 8, 2, 2. मन्थे संपातमवनेष्येत् KĪND. Up. 5, 2, 4. — Diese Verbindung ist später nicht zu belegen, da नावनीत MBh. 5, 7319 = BENF. Chr. 43, 29 adj. von नवनीत ist. — Vgl. अवनय, °नयन, °नाय.